॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

अस्तिनु तस्मादोजीयो यद्र विहव्येनेजिरे।

द्रव्यरहित आत्मिक यज्ञ सामान्य यज्ञ से बढ़कर है।

वर्ष ३२, अंक ३५ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार २१ सितम्बर, २००९ से २७ सितम्बर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में

संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती को समर्पित

द्वि दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

संस्कृत को नई जीवन ज्योति दी महर्षि दयानन्द ने – डॉ. रमाकान्त गोस्वामी

संस्कृत पढ़ने से व्यक्ति के ज्ञान के स्तर में स्वत: वृद्धि होती है – महाशय धर्मपाल

दिल्ली संस्कृत अकादमी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज पंजाबी बाग में महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए अखिल भारतीय संस्कृति साहित्य महासम्मेलन के महामन्त्री एवं दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री रमाकान्त गोस्वामी ने कहा कि संस्कृत को चिरजीव रखने में महर्षि दयानन्द का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द जी ने संस्कृत ही नहीं समाज में नई जागृति पैदा की थी, यह उपयुक्त समय है कि आर्य समाज द्वारा महर्षि दयानन्द जी के 125 वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर पूरे वर्ष सारे देश में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जायेगें। इन कार्यक्रमों के माध्यम से महर्षि दयानन्द के आदर्शो को पुन: स्थापित करे जिसकी आज विश्व को बहुत जरुरत है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित विद्वान बदायूं उत्तर प्रदेश के डॉ. विशुद्धानन्द मिश्र ने कहा कि महर्षि दयानन्द के जीवन के सिद्धान्तों को पढ़ने से यह विदित होता है कि वे समाजिक चेतना की त्यागमूर्ति थे। उन्होंने कई विरोधों का सामना करते हुए कन्या शिक्षा, विधवा सम्मान, अहिंसा से समाज का निर्माण अस्पृश्यता आदि बुराइयों को समाज से दूर करने का प्रयास किया। वेद भारतीय संस्कृति की नहीं विश्व संस्कृति की आत्मा है। वेदों की ओर चलने का आह्वान पूरे समाज ने किया।

संस्कृत के विस्तार में अकादमी का योगदान महत्वपूर्ण
– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली सभा

संस्कृत देव भाषा है – यह अपने आप में एक अनूठी विद्या है
– आचार्य विशुद्धानन्द

संस्कृत को नए आयाम पर पहुंचाया आर्यसमाज ने
– श्रीकृष्ण सेमवाल, उपाध्यक्ष, संस्कृत अकादमी

दिल्ली संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल ने कहा कि संस्कृत भारत की आत्मा है। संस्कृत के बिना भारत की कल्पना करना व्यर्थ है। यदि वास्तव में भारत से भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा को हटा दिया जाय जो राष्ट्र शून्य हो जायेगा। भारत को संस्कृति, अस्मिता एवं चिन्तन संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य ही देता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवक्ता, वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार ने कहा कि विश्व साहित्य पटल पर संस्कृत साहित्य के सामने अन्य सभी साहित्य गौण हैं। हमारे वेद, दर्शन, उपनिषद्, आरण्यक आदि विश्व के लिये प्रेरणा स्रोत है।

देहरादून की डॉ. अन्नपूर्णा ने कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए अथक परिश्रम के कारण ही समाज में नारी को उचित स्थान मिल पाया है। वेदों का पठन पाठन एवं अहिंसा, छुआछूत आदि

– *शेष पृष्ठ 4 पर*

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

राष्ट्र के वीर शहीदों को नमन करने हेतु

एक शाम शहीदों के नाम

दिनांक : 2 अक्तूबर, 09 समय : सायं 3 बजे

स्थान : आर्यसमाज मिण्टो रोड, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2

सभी आर्यजन सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर शहीदों को श्रद्धांजलि तथा युवाओं का उत्साहवर्धन करें। कार्यक्रम के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था होगी।

-: निवेदक :-

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश एवं आर्यसमाज मिण्टो रोड, नई दिल्ली

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

महर्षि दयानन्द सरस्वती का

१२६वां निर्वाण दिवस समारोह

दिनांक : 17 अक्तूबर, 2009 (शनिवार) स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड) नई दिल्ली-2

यज्ञ एवं विशाल श्रद्धांजलि सभा : प्रात: 8 से 12 बजे

आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और भारी संख्या में पधारकर महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

–: निवेदक : –

धर्मपाल आर्य (प्रधान) अरुण प्रकाश वर्मा (कोषाध्यक्ष) सुरेन्द्र रैली (महामन्त्री)

दर्शन व्याख्या - 14

उपमान प्रमाण

गतांक से आगे :–

उपमान प्रमाण: जिससे तुलना की जाती है अर्थात उपमा दी जाती है, उसे उपमान कहते है– 'उपमीयते येन तदुपमानम्') न्याय दर्शनकार महर्षि गौतम के शब्दों में 'प्रसिद्धसाधर्म्यात साध्यसाधनुमुपमानम्' (न्याय०1–1–6) अर्थात प्रसिद्ध गुण–धर्मों के उस साधन को जिससे साध्य की प्राप्ति होती है, उसे उपमान कहते हैं। स्पष्ट शब्दों में यह कह सकते हैं कि यदि व्यक्ति किसी वस्तु, प्राणी आदि की आकृति, रूप, रंग अर्थात गुण–धर्मो से सुपरिचित है तो उसक सादृश्य से अर्थात् उस उपमान से अपने अपरिचित साध्य (पदार्थ,प्राणी, आदि) का अनुमान कर सकता है। इसे ही उपमान प्रमाण कहते है। जैसे किसी ने किसी से कहा कि नीलगाय गाय के समान होती है अब वह व्यक्ति जिसने कभी नीलगाय को नहीं देखा है, जंगल में नीलगाय को देखकर गाय के सदृश्य (उपमान) से यह अनुमान लगा लेता है कि यह नीलगाय ही है। इस प्रकार के अनुमान को उपमान प्रमाण कहते है।

शब्द प्रमाण: शब्द प्रमाण का अर्थ है आप्त व्यक्ति का उपदेशः 'आप्तोपदेशः शब्दः' (न्याय०1–1–7) देव दयानन्द के शब्दों में 'आप्त' व्यक्ति का अर्थ है, आप्त अर्थात पूर्ण विद्वान धर्मात्मा, परोपकार, प्रिय, सत्यवादी, पुरूषार्थी, जितेन्द्रिय, पुरूष जैसा अपने आत्मा में जानता हो और जिससे सुख पाया हो उसी के कथन की इच्छा से प्रेरित सब मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेष्टा हो अर्थात जितने पृथ्वी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थो का ज्ञान प्राप्त होकर उपदेष्टा होता है। जो ऐसे पुरूष और पूर्ण आप्त परमेश्वर के उपदेश वेद हैं, उन्हीं को शब्द प्रमाण जानों' (सत्यार्थ प्रकाश तृ. स. पृ. 39) स्पष्टः आप्त पुरूषों के उपदेश और पूर्ण आप्त पुरूष के वेदोपदेश को भी महर्षि ने शब्द प्रमाण के अन्तर्गत स्वीकार किया है। डॉ. सोमदेव शास्त्री के निष्कर्षानुसार 'विश्वास योग्य प्रामाणिक व्यक्ति के वचन को शब्द प्रमाण कहा जाता है' (न्याय0वैशेषिक संदेश पृ. 22)

शब्द प्रमाण के दो प्रकार है– 1. दृष्टार्थ और 2. अदृश्टार्थः 'स द्विविधो दृष्टादृश्टार्थत्वात।' (न्याय० 1–1–8) लौकिक विषय से जुड़ा शब्द प्रमाण दृष्टार्थ और अलौकिक विषय से संबंध अदृष्टार्थ है। दृष्टार्थ का अभिप्राय इन्द्रियों से जाना जा सकता है, किन्तु अदृष्टार्थ का इन्द्रियों से नहीं। उदाहरणार्थ किसी ने कहा कि पुत्र की कामना वाला व्यक्ति पुत्रेष्ठि यज्ञ करे। पुत्रोत्पत्ति पर इस इन्द्रिय से देखा जा सकता है, अतः यह दृष्टिार्थ शब्द प्रमाण है। इसी प्रकार यदि किसी ने कहा कि 'स्वर्ग कामो यज्ञेत' –स्वर्ग (मोक्ष) की कामना वाला यज्ञ (साधना) करे। स्वर्ग या मोक्ष को लौकिक इन्द्रियों से नहीं देखा जा सकता, अतः यह अदृष्टार्थ (अलौकिक) शब्द प्रमाण है।

*– **डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),***
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 ***क्रमशः***

Questions & Answers — Improving Concentration

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

Q.: Who was the senapati of Ram against Rawan in war? **Janardan**

Ans.: Main senapti of the war was Sri Ram himself under whom Lakshman, Angad, Sugreev, Hanuman, Jamvat, Nal, Neel, fought the war against Ravan.

Q.: What are the asanas, pranayam, mantra which can improve our concentration and memory besides bharmacharya? Also what are the asanas which Swami Vivekananda used to do? **Rahul**

Ans.: Recently I have given a reply concerning your question which can be seen on the website. In the end, I will try to intimate you that only mantras and asans will do nothing until we get the whole knowledge of Vedas and we adopt hundred percent said knowledge in our daily life. Atharvaveda kand 12 clarifies that the pice-meal knowledge of any Ved mantra or Vedas is not accepted by God. Instead God gives punishment. So, contact with learned acharya of Vedas and yoga philosophy. Daily havanè yajyen, name jaap of God and hard practice of full ashtang yoga philosophy and not only asans, pranyaam etc., enable an aspirant to attain the qualities of ascetic vide, yoga shastra sutra 1/15, 16. then only the aspirant achieves his main life motto i.e., salvation. One more thing that the said worship can be done while discharging all moral duties in the family or by becoming ascetic i.e., sanyasi.

To be continued....

देववाणी : संस्कृत

सर्वचिकित्सापद्धतीनाम् आयुर्वेदत्वम्

अन्तिम भाग –

5– कौमारभृत्यं नाम – कुमारभरणधात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थ दुष्टस्तन्याग्रहसमुत्थानां च व्याधी नामुपशमनार्थम्।

6– अगदतन्त्रं नाम– सर्पकीटलूतामूषकादिदष्ट विषव्यंजनार्थ विविधविषसंयोगोपशमनार्थ च ।

7– रसायनतन्त्रं नाम– वयः स्थापनमायुर्मेधाबलकरं रागहरणसमर्थ च।

8– वाजीकरणतन्त्रं नाम– अल्पदुष्टक्षीणविशुष्करेतसाम् आप्यायनप्रसादोपचय – जननिमित्तं प्रहषर्ज्ञजननार्थ च।

एतेषु अंगेषु यदस्ति तदन्यत्रास्ति। चिकित्सा विषये एतावत् समृद्ध चिन्तनं कस्य विदुषः हृदयं न मोदयेत्।

किन्तु आयुर्वेदस्य पारं गन्तुं न शक्यते। अतः आयुर्वेदक्षेत्रे नित्यं नवीनम् अनुसन्धानम् आवश्यम्। एतदर्थ कापि आयुर्वेदानुसन्धानलं समितिः स्यात्। आधुनिकविज्ञानस्य प्रक्रिया, साधनं च तत्रोपयुक्तं स्यात्। अनुसन्धानस्य प्रकल्पाः रचनीयाः।

निदानपंचकम् त्रिदोषविज्ञानम् चिकित्साविज्ञानम् औषधविज्ञानम् इतिवद् अनेकानि क्षेत्राणि स्युः। तत्र अनेके मेधाविनः पण्डिताः अनुसंन्धानं कृत्वा प्रतिवेदनं दद्युः।

एवं सति आयुर्वेस्य समूलरोगचिकित्सापद्धत्याः आशिखाराग्रम् उन्नयनं भवेत्। तदा पुनः वयम् उदघोषयितुं शक्नुमः नगाधिराजम् आरुह्य–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशच्छ्रेष्ठभिषजः।
वैद्यविद्यां सुशिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

पूर्वत्र लिखितेन सुकरमिंद वचनं भवति यत् संसारस्य सर्वा चिकित्सा पद्धतयः आयुर्वेदादेव विनिर्गताः संस्कृतभाषावद्।

– सुदर्शन 'व्रती', प्राध्यापक,
महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा)

बोध कथा

हितभुक् मितभुक् ऋतभुक्

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

शरीर को ठीक रखने की क्या विधि है, इसके लिए आपको एक कहानी सुनाता हूँ। समझने के लिए शायद यह कहानी बनाई गई है। कहानी यह है कि महर्षि चरक जब आयुर्वेद के सारे ग्रन्थ लिख चुके, सब प्रकार की विधियों का, सब प्रकार की औषधियों का, चिकित्साओं का वर्णन कर चुके और उनका प्रचार कर चुके तो उनके मन में विचार आया कि चलूँ देखूँ, लोग मेरे बताए हुए मार्ग पर चलते भी है या नहीं? मेरा परिश्रम सफल हुआ या नहीं? एक पक्षी का रुप धारण करके वे उड़े और वहाँ गए, जहाँ वैद्यों का बाजार था। एक वृक्ष पर बैठकर पक्षी ने ऊँची आवाज में कहा– "कोररुक?" अर्थात् रोगी कौन नहीं? एक वैद्य ने पक्षी को देखा, इसकी बात को समझा, बोला – "जो च्चवनप्राश खाता है।" एक और वैद्य बोला– "नहीं, जो चन्द्रप्रभावटी खाता है।" तीसरा वैद्य बोला– "जो बंग भस्म खाए, वह अरोगी है, वही अधिक स्वस्थ है।"

चौथे वैद्य साहब बोले– "ये सब बातें गलत हैं। जब तक लवण भास्कर चूर्ण नहीं खाओगे, तब तक पेट ठीक नहीं होगा।"

चरक ने यह सब कुछ सुना तो दुःख हुआ उन्हें। आश्चर्य के साथ उन्होंने सोचा– 'मैनें इतना बड़ा शास्त्र रचा तो क्या मनुष्य के पेट को दवाइयों को गोदाम बना दिया जाय? मेरा परिश्रम निष्फल हो गया ! कोई भी कुछ सीखा नहीं।' इससे दुःखी होकर एक उजाड़ सुनसान स्थान पर जा बैठे, एक सूखे वृक्ष की शाखा पर। इसके पास ही एक नदी बहती थी। नदी में नहाकर प्रसिद्ध वैद्य श्री वाग्भट्ट महाराज बाहर आ रहे थे। चरक ने उन्हें पहचान; पुकारकर कहा – "कोररुक्?"

वाग्भट्ट चलते –चलते रुक गये। आँखें उठाकर पक्षी की ओर देखा; बोले– "हितभुक् मितभुक् ऋतभुक्।"

चरक इन शब्दों को सुनते ही वृक्ष से नीचे आ गये; पक्षीरूप छोड़कर वागभट्ट के समक्ष खड़े हो गए –"तुम ठीक समझे हो वैद्यराज!" परन्तु इस हितभुक् मितभुक् ऋतभुक् का अर्थ क्या है? अर्थ मैं समझाता हूँ। ऐसी वस्तुएँ खाओं, जो आपके शरीर के लिए अच्छी हैं। केवल खाने के लिए मत जियो, जीने के लिए खाओ। जिह्वा के स्वाद में फँसकर पेट में कूड़ा करकट न भरते जाओ। यह सोचकर खाओ कि जो खाते हो, उससे लाभ क्या होगा।

विजया-दशमी पर विशेष

विजय यात्रा का पर्व है विजय दशमी

जगतीतल में भारतवर्ष ही एक ऐसा भूखण्ड है जहाँ वर्षा की ऋतु अन्य ऋतुओं से पृथक होती है। अन्य देशों में शीत (जाड़ा) और उष्ण (गरमी) दो ऋतुएं (मौसम) होती हैं। उन में ही समय–समय पर वर्षा भी होती रहती है। किन्तु भारत में जाड़ा, गरमी और बरसात के तीन मौसम वर्ष के चार–चार मास रहते हैं। वर्षा के चातुर्मास्य (चौमामसा) में वर्षा का इतना प्राचुर्य रहता है कि उस में बंगाल आदि कई देशों में तो जल थल एक हो जाता है। भारत के अन्य प्रान्तों की नदियाँ भी बाढ़ से उमड़ पड़ती हैं। ताल–तलैया जल से परिपूर्ण हो जाते हैं। आने–जाने के सारे मार्ग कीचड़ और जल से भरे रहते हैं। चार मास तक शकट (गाड़ी ताँगों) आदि वाहनों का यातायात प्रायः रुका रहता है। किसान अपने गाड़ी ताँगों को उड़ेल (पृथक–पृथक करके) रख देते हैं। प्राचीन भारत में तो, जब यहाँ सड़कों वा राजमार्गों की बहुतायत न थी, वर्षाकाल में यात्राएं बिलकुल ही बन्द रहती थीं। राजन्यवर्ग की विजय यात्रा और वैश्यों की व्यापार यात्रा वर्षा के चातुर्मास्य में रुकी रहती थी। वर्षा के अवसान पर जब शरद्ऋतु का प्रवेश होता था, तो इन अवरुद्ध यात्राओं का पुनः प्रारम्भ होता था।

अब नदियों को गाध (उथला) करती हुई, और मार्ग के कीचड़ों को सुखाती हुई, शरदऋतु का पदार्पण हो गया है। जलाशयों में कुमुदिनियाँ (कुई) खिल रही हैं। निर्वृष्ट (बरसे) हुए हल्के मेघ सूर्य के मार्ग मे से हट गए हैं, इसलिए उस का प्रताप चारों दिशाओं में फैलने लगा है। शरद्ऋतु की साम्राज्ञी कुमुदिनी के छत्र और खिले हुए काँस के चमर से शाभा पा रहे हैं। स्वच्छ चाँदनी आँखों को अतीव आनन्द देती है। स्थल पर हंसों की पंक्तियाँ, आकाश में ताराओं और जलाशयों में कुमुदिनियों पर श्वेतता छाई हुई है। ईखें बढ़कर लम्बी और सघन हो गई हैं और उन के खेतों की छाया में मेंढ़ों पर बैठे हुए गोपालबाल मधुर गीत गा रहे हैं। अगस्त्य नामक तारे के उदय होते ही जलाशय स्वच्छ हो गए हैं। गाड़ियों के बैल वर्षा भर छूटे रहकर और यथेष्ट घास चरकर खूब तैयार हो गए हैं। उन के ठांठ मोटे होकर बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं। वे आनन्द से उत्तमत होकर खोरू खोद रहे हैं– वप्रक्रीड़ा कर रहे हैं। सींगों से नदियों की ढांगों को ढा रहे हैं। शारद (सप्तपर्ण) वृक्षा के पुष्प खिल रहे हैं और उनमें हाथी के मद की सी गन्ध आ रही है। चारों ओर शरत्–श्री विराज रही है ऐसे समय में ही, इन दिनों–दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा के पुनः प्रारम्भ की तैयारियां होती हैं। विजयादशमी उत्सव का समारोह आरम्भ होता है। बरसात में जंग लगे हुए योद्धाओं के खड्गादि और शणित किये जाते हैं, जिन की चमक आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करती है। अश्वों और हाथियों की सज्जा सामग्री (वल्गा–लगाम, इयाण–पलाग) आभूषण और हौदे आदि का संस्कार और सुधार किया जाता है। चतुरंगिणी सेनाएं सुसज्जित की जाती हैं।

वैश्यों (कृषकों और व्यापारियों) के चार मास से उड़ले पड़े हुए शकटादि वाहन धावन (धोने और पौंछने) और तेल मर्दनादि द्वारा बांध जोड़कर यात्रायोग्य सन्नद्ध किये जाते हैं। तथा व्यापारियों की दुकानों पर लेखनी मसिपात्र आदि लेखन उपकरण स्वच्छ किये जाते हैं, और नये बहीखाते और बस्ते बदले जाते हैं। संक्षेपतः प्रत्येक व्यवसायी अपने उपकरणों का परिमार्जन और सन्नहन (ुनपचचपदह) करता है। इन सारे कार्यों की तैयारी आश्विन शुदि प्रतिपदा से आरम्भ करके आश्विन शुदि विजया दशमी तक पूरी हो जाती है। इस लघु लेखक को स्मरण है कि उस की बाल्यावस्था में उसके पिता के यहाँ विजया दशमी से एक सप्ताह पूर्व से शस्त्रों के सैकल का कार्य होता रहता था।

विजया दशमी के दिन यज्ञशाला के द्वार देश में सुसज्जित, सशस्त्र, चतंरंगिणी (अश्व, हाथी रथ तथा पदाति को क्रमबद्ध खड़ा करके उनकी नीराजना विधि (आरती) की जाती है। नीराजना विधि में स्वस्ति और शन्तिवाचन पूर्वक बृहत्होम यज्ञ होता है, जिस में क्षात्र धर्म के वर्णनपरक मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दी जाती हैं।

वैश्यवर्ण वा अन्य व्यवसायी भी इसी प्रकार अपने व्यवसाय के वाहन आदि उपकरणों को सुसज्जित और परिमार्जित रूप में यज्ञशालाओं में क्रमबद्ध उपस्थित करके नीराजना का अनुष्ठान करते थे। यह कृत्य पूर्वाह में होता था। सांयकाल के समय राजन्य गण अपनी सज्जित सेना सहित सजधज से विजय यात्रा का नियम बद्ध उपक्रम करते थे। वैश्य भी अपने वाहनों में बैठकर इसी प्रकार व्यापार यात्रा का प्रारम्भ सूचक अनुष्ठान करते थे। विजय दशमी के दिन से दिग्विजय यात्रा और व्यापार यात्रा निर्बाध चल पड़ती थी। इसी प्रचीन दिग्विजय यात्राओं के स्मारक रूप में अवशेष आज तक सायंकाल के समय ग्राम सीमोल्लंघन यात्रा रूप से भारत के महाराष्ट्र आदि अनेक प्रान्तों में प्रचलित है।

इस अवसर पर प्रजाएं अपने प्रभुओं की सेवा से रोकड़ा रुपये के रूप में उपायन (भेंट) प्रस्तुत करती थीं और वे भी उन को बहुमूल्य उपहार और पारितोषिकों से पुरस्कृत करते थे।

जन साधारण में इस समय परस्पर एक दूसरे से गृह पर जाकर मिलने भेंटने की प्रथा का भी प्रचार था। इस से जहाँ वर्ष भर के मिथो मनोमालिन्य व मनमुटाव को मिटना अभिप्रेत था। वहां दीर्घयात्रा पर जाने से पूर्व वयस्कों, सम्बन्धियों और सन्मित्रों का अन्तिम साक्षात्कार भी उद्दिष्ट था।

प्राचीन काल में विजय दशमी का शुद्ध स्वरुप इतना ही प्रतीत होता है। पीछे से इस पर्व के आनन्दावसर पर श्री रामचन्द्र के भव्याभिनय वा रम्य रामलीला के प्रदर्शन का प्रचार चल पड़ा और जिस ने विकृत रूप घारण किया।

दीर्घकाल के विजय दशमी के पर्व पर रामलीला के रचे जाने के कारण

– शेष पृष्ठ 4 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

समलैंगिकता के विरोध में ज्ञापनपत्र भेजने की अपील

आर्यजनों एवं आर्यसमाजों से निवेदन है कि समलैंगिकता के विरोध में नीचे दिए गए प्रारुप की प्रतियां तैयार करके अधिकाधिक संख्या में हस्ताक्षर कराकर – **डॉ. मनमोहन सिंह, प्रधानमन्त्री भारत सरकार, प्रधानमन्त्री कार्यालय, साउथ ब्लाक, रायसीना हिल, नई दिल्ली–11** के पते पर भेजें **या 011– 23019545, 23016857 पर फैक्स करें।** जिससे भारत सरकार मजबूती के साथ हमारा पक्ष माननीय उच्चतम न्यायालय के समक्ष रख सके।

–: निवेदक :–

ब्र. राजसिंह आर्य	**अनिल तेनजा**	**विनय आर्य**
प्रधान	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

माननीय सुप्रीम कोर्ट में चल रहे धारा 377 प्रकरण के सम्बन्ध में

भारत सरकार से निवेदन

दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा धारा 377 के सम्बन्ध में दिए गए निर्णय के खिलाफ जो याचिका सुप्रीम कोर्ट में लम्बित है उसमें माननीय उच्चतम न्यायालय ने भारत सरकार का पक्ष जानना चाहा है। हम सब अधोहस्ताक्षरी भारत सरकार से यह मांग करते हैं कि धारा 377 पर अपना पक्ष रखते हुए वह दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा दिए गए निर्णय का स्पष्ट विरोध करें तथा धारा 377 के मूल स्वरूप को यों का यों ही बनाए रखें।

क्र. सं.	नाम	पता	हस्ताक्षर
1.			
2.			
3.			

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पाद (45)

विप्रतिषेधाच्च ।। 45।।

अर्थ – (विप्रतिषेधात्) विशेष रूप से प्रतिषेध से (च) भी।

भावार्थ– सूत्रकार कहते हैं इस पाद के आरंभ में ईश्वर के विरोध मतों का प्रतिषेध यानी खंडन किया गया था। वहां बताया था कि चेतन के सहयोग के विना प्रकृति स्वतः जगत् के रूप में परिणत नहीं हो सकती। वहां इस बात का भी निषेध किया गया था कि चार प्रकार के परमाणुओं से जगत् स्वतः उत्पन्न हो जाता है और इसके लिए ब्रह्म की प्रेरणा आवश्यक नहीं होती। अथवा यह कहना कि परमाणुओं का समुदाय ही जगत् है – इसका प्रतिषेध भी इस पाद के मध्य में किया गया है। जगत् अभाव मात्र है और केवल ब्रह्म की सत्ता भी ब्रह्म के वास्तविक दोष रहित–स्वरूप को सिद्ध करने में सहायक नहीं है इसका खंडन भी पाद के मध्य भाग मे ही किया है। अंत में ब्रह्म के शरीरी होने का प्रतिषेध करके जीवात्मा के साथ उसके पूर्ण स्वरूप की तुल्यता का निषेध किया गया है। इस प्रकार इस पाद में विभिन्न प्रतिषेधों के माध्यम से ब्रह्म की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया गया है। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ब्रह्म जगत् का निमित्त (कारण) है। इसके विना जगत् की उत्पत्ति की व्याख्या संभव नहीं है। केवल ब्रह्म की सत्ता मानकर सृष्टि की व्याख्या संभव नहीं है। इसलिए सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी चेतन ब्रह्म के साथ जगत् के जड़ उपादान तत्व प्रकृति की सत्ता को स्वीकार कर, नित्य, चेतन जीवात्माओं के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। ये जीवात्मा ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जानकर उस अनुपम, असीम, आनन्द की अनुमूर्ति को पाने का प्रयास करती है। इस प्रकार चेतन, सर्वज्ञादि गुणों से युक्त ब्रह्म को, नित्य चेतन जीवात्माओं को और जगत् के जड़ उपादान तत्व प्रकृति को जान लेने पर कुछ भी ज्ञातव्य शेष नहीं रहता। ब्रह्म को जानकर उसे प्राप्त कर लेना ही जीवात्मा का अंतिम लक्ष्य है।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

प्रथम पृष्ठ का शेष

बहुमत से ऐसे कार्य है जिनको उन्होंने समाज से दूर करने के प्रयास किया। आज समाज में यह परिवर्तन उन्हीं के प्रयासों की देन है।

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ. सुभाष विद्यालंकार ने कहा कि राष्ट्रीय एकता में महर्षि दयानन्द का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने समय के अनुरुप लाखों लोगो में राष्ट्रीयता की भावना पैदा की।

अकादमी के सचिव डॉ. सुरेश चन्द्र शर्मा ने कहा कि अकादमी द्वारा महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष को उपलक्ष्य में उनके कार्यो के प्रसारित/ प्रचारित करने का प्रयास कर रहें है। वेदों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में इनके योगदान को भूला नही जा सकता है। इस संगोष्टी में दो दिनों तक अनेक शोध पत्र प्रस्तुत किये जायेगें जिससे नयी सोच मिलेगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं कार्यक्रम संयोजक श्री विनय आर्य ने कहा कि दिल्ली सरकार ने दिल्ली में महर्षि दयानन्द के विचारों पर यह संगोष्ठी आयोजित कर बहुत प्रोत्साहन दिया है।

संगोष्ठी के समापन समारोह के अवसर पर अकादमी सचिव डॉ. सुरेश चन्द शर्मा ने संगोष्ठी में हुए विचार–विमर्श पर विस्तारपूर्वक बताया कि इस दो दिवसीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रदेशों के संस्कृत विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। इस संगोष्ठी में महर्षि दयानन्द के चिन्तन पर 12 विषय संगोष्ठी हेतु रखे गये थे। जिसमें शिक्षा के प्रसार में दयानन्द विचारधारा से युक्त गुरुकुलों का योगदान। स्वामी दयानन्द का राजनैतिक चिन्तन, स्वामी दयानन्द के चिन्तन के अनुसार सामाजिक व्यवस्था, आधुनिक सन्दर्भ और वर्तमान में उसकी उपयोगिता, स्वामी दयानन्द के चिन्तन में भारतीय संस्कृति, स्वतंत्रता आन्दोलन में गुरुकुलों का योगदान आदि विषयों पर ज्ञानोपयोगी शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इस संगोष्ठी लगभग 30 विद्वानों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

मुख्यवक्ता गाजियाबाद महा विद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. गणेश दत्त शर्मा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सामाजिक चेतना की त्यागमूर्ति थे। वे विश्व पटल पर दीपक की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने समाज से कन्या शिक्षा, विधवा सम्मान, अहिंसा से समाज का निर्माण अस्पृश्यता आदि बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने वेदों के प्रचार प्रसार में बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

दिल्ली संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. श्रीकृष्ण सेमवाल ने कहा कि संस्कृत साहित्य के सामने अन्य सभी साहित्य गौण है। हमारे वेद, दर्शन उपनिषद् आरण्यक आदि विश्व के लिये प्रेरणा श्रोत है।

इस अवसर पर आर्यनेता महाशय धर्मपाल ने कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा किये गये अथक परिश्रम के कारण ही समाज में से अनेक बुराइयों को समाप्त किया गया। वेदों का पठन पाठन एवं अहिंसा छुआछूत आदि बहुमत से ऐसे कार्य हैं जिनको इन्होंने समाज को जाड़ने का प्रयास किया। आज समाज में यह परिवर्तन इन्हीं के प्रयासों की देन है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने संगोष्ठी में आये वक्ताओं का परिचय कराते हुए कहा कि यहाँ पर हर पीढ़ी के शोधकर्त्ता आए हुए है, यह प्रसन्नता का विषय है। विद्वानों में दिल्ली से **आचार्य धर्मपाल आर्य, डॉ. प्रवेश सक्सैना, डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, अमेठी से – ज्वलन्त कुमार, वाराणसी से आचार्य नन्दिता शास्त्री, डॉ. प्रीति, आचार्य सूर्यादेवी, देहरादूर से – डॉ. अन्नपूर्णा, दिल्ली से– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. सुभाष विद्यालंकार, डॉ. शशि तिवारी, डॉ. समेधा, डॉ. प्रणव देव आर्य, जयदेव आर्य, डॉ. कृष्णलाल, आचार्य हरि प्रसाद, डॉ. महावीर, हैदराबाद से – सुनीता आर्य, डॉ. योगेन्द्र कुमार, आन्ध्र प्रदेश से – श्री रविन्द्र, नजीबाबाद से – डॉ. प्रियंवदा वेदभारती, दिल्ली से – श्री कैलाश चन्द्र शास्त्री, आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री डॉ. कर्णदेव शास्त्री, आचार्य चन्द्र शेखर शर्मा** सहित अनेक वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये जो कि एक ऐतिहासिक कार्य है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आलोक भारती संस्था के प्रबन्धक आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री ने कहा कि अकादमी द्वारा महर्षि दयानन्द के 125 वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में उनके कार्यों को प्रसारित/ प्रचारित करने का प्रयास कर रहे हैं। वेदों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में इनके योगदान को भूला नहीं जा सकता है। इस दो दिनों तक चली संगोष्ठी में अनेक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। ये स्वामी जी को वास्तविक श्रद्धाजंलि है। अकादमी के उप सचिव डॉ. जीतराम भट्ट ने कार्य संगोष्ठी का दोनों दिन संचालन किया। संगोष्ठी में अनेक संस्कृत प्रेमी एवं आर्य समाज प्रेमी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्यसमाज के प्रधान श्री राजीव आर्य एवं श्री अरविन्द नागपाल जी ने कार्यक्रम में विशेष योगदान दिया।

द्वि दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

पृष्ठ ३ का शेष

विजय यात्रा का पर्व ....

जनता में यह मिथ्या धारणा बद्धमूल हो गई है कि विजया दशमी के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम सूर्यवंशावतंस श्रीरामचन्द्र ने रावण का वध करके लंका पर विजय प्राप्त की थी बाल्मीकि रामायण के अवलोकन से इस चिरकालीन कल्पना का नितान्त निराकरण होता है। उपर्युक्त ग्रन्थ के अनुसार श्री पण्डित हरिमंगल मिश्र एम० ए० कृत प्राचीन भारत के परिशिष्ट में जो रामचरित की घटनाओं की तिथियों की दो जन्त्रियां दी गई हैं। उन से रावणवध की तिथियों क्रमशः वैशाख कृष्ण चतुर्दशी और उक्त ग्रन्थ में ही उद्धृत पं. पहादेव प्रसाद त्रिपाठी कृत "भक्ति विलास" के आधार पर फाल्गुन शुदि एकादशी गुरुवार ज्ञात होता है। श्री पंडित हरिशंकर जी दीक्षित अपनी त्यौहार पद्धति में इस विषय में इस प्रकार लिखते हैं कि "रामायण का कथन इस विश्वास का विरोध करता है। वाल्मीकि रामायण का कथन इस विश्वास का विरोध करता है।

वाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है कि आज के दिन महाराजा रामचन्द्र ने पम्पापुर से लंका की ओर प्रस्थान किया और चैत्र की अमावस्या को रावण का वध कहा गया है। इससे यह स्पष्ट विदित होता है कि श्री महाराजा रामचन्द्र की विजय तिथि चैत्र कृष्ण अमावस है। आश्विन शुक्ला दशमी को श्री महाराज रामचन्द्र का विजय दिन मनाना वाल्मीकि रामायण से तो सिद्ध होता नहीं और न गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण से यह सिद्ध होता है कि यह दशमी श्री रामचन्द्र जी की विजय तिथि है। भाषा की रामायण से भी यह विदित होता है कि वर्षा ऋतु के चार मास पर्यन्त रामचन्द्र जी का निवास पम्पापुर ही में रहा। वर्षाऋतु के बीतने पर श्री हनुमान् जी सीता देवी की खोज में गए हैं। इसके पश्चात् ही श्री रामचन्द्र जी का जाना विदित होता है। अतएव जनता का यह विश्वास कि श्री रामचन्द्र जी ने आश्विन शुकला दशमी को रावण का वध किया है, निर्मूल प्रतीत होता है।"

उपर्युक्त अवतरणों से पूर्ण प्रमाणित होता है कि कम से कम विजया दशमी रावण वध और लंका विजय की तिथि नहीं है। *– साभार : आर्य पर्व पद्धति*

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में

रक्तदान शिविर

शुक्रवार 2 अक्तूबर, 2009

समय: प्रात: 10 से दोपहर 2 बजे

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर रक्तदान करें और समाज, राष्ट्र व मानव सेवा में अपना योगदान करें, क्योंकि रक्तदान है जीवनदान।

– ओमप्रकाश आर्य, प्रधान

सतीश चड्डा, मन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

गुरु–शिष्य के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

6,7,8 नवम्बर, 2009 : मथुरा

उद्घाटन : 6 नवम्बर, 2009 प्रात: 10 बजे

मुख्य अतिथि : महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील

19वीं सदी के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा ग्राम में हुआ। विरक्ति होने पर घर परित्याग के बाद निरन्तर 13 वर्षों तक भारतवर्ष के विभिन्न दुर्गम तीर्थस्थलों में भ्रमण करते रहे, परन्तु सच्चे शिव के दर्शन करवाने वाला योग्य गुरु नहीं मिला। अन्त में 4 नवम्बर बुधवार (कार्तिक शुक्ल 2) सन् 1860 को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पावन नगरी मथुरा में वेद और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती की कुटिया का द्वार खटखटाया और श्रीचरणों में रहकर शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की।

मथुरा में महान् गुरु और महान् शिष्य के प्रथम मिलन का 150वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। आर्यजगत् के लिए यह गौरवशाली, प्रेरणादायक वर्ष है। आर्यों ने इस अवसर पर 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय किया है। 8 नवम्बर को महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी रामदेव जी करेंगे। **आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर प्रथम मिलन के 150वें वर्ष को एक यादगार के रूप में अपने हृदयों में अंकित करें।**

आयोजक :– गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा (उ.प्र.)

Email : virjanandtrust@yahoo.in, virjanandtrust@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें

www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें

www.swamidayanand.com

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी ध्यान दें!

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न सम्मानों हेतु दिल्ली के

आर्यसमाजों/गुरुकुलों/आर्यवीर दल/वीरांगना दल/शिक्षण संस्थाओं से नाम भेजें

दिल्ली में आयोजित क्षेत्रीय बैठकों में दिए गए विभिन्न आधारों दिए जाने वाले सम्मानों के लिए अपनी आर्यसमाज से नाम यथाशीघ्र, **'संयोजक'** के नाम **'125वां निर्वाण वर्ष सम्मान चयन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, दूरभाष - 011-23360150, 23365959, 23343737'** के पते पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए समिति कार्यालय के उपरोक्त नम्बरें पर सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर

महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं

आर्यसमाज सम्भाजीनगर के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

एवं अखिल भारतीय सस्वर वेदपाठी सम्मान समारोह

30 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2009

स्थान : सरस्वती भुवन, संभाजीपेठ, सम्भाजीनगर, औरंगाबाद(महा.)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

-: निवेदक :-

स्वामी श्रद्धानन्द	दयाराम बसैये	आचार्य शिवमुनि
प्रधान	संयोजक (09422212045)	मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रस्तुत हैं

वर्ष 2010 के कैलेण्डर

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर पर

20×30 एवं 14×30 इंच के आकारों में

मूल्य 850/-रु. एवं 750/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

नोट : केवल दीपावली तक ही आर्डर बुक किए जाएंगे। अपनी प्रतियां बुक कराने के लिए 50 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें। 250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (50/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है।

-: सम्पर्क करें :-

व्यवस्थापक, साहित्य प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-111001

दूरभाष : 011-23360150, 23365959 फैक्स : 011-23343737

इन्दौर पुस्तक मेला सम्पन्न

स्टाल पर पधारने वालों की प्रतिक्रियाएं करती हैं कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन

अगला पुस्तक मेला चण्डीगढ़

वहां करेंगे विस्तृत स्तर वेद एवं साहित्य प्रचार

इसके बाद लखनऊ (7-15 अक्तूबर) तथा मैसूर (14-22 नवम्बर) में भी किया जाएगा प्रचार

विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : मथुरा

6, 7, 8 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

आर्यजनों के लिए बस व्यवस्था

दिल्ली एवं आसपास के आर्यजनों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में मथुरा आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित करने हेतु सभा की ओर से 2×2 डीलक्स बसों की व्यवस्था की गई है। सभा के नेतृत्व में जाने वाले आर्यजनों के लिए आना-जाना, आवास (दो लोगों के लिए एक कमरा), आगरा भ्रमण, भोजन एवं शोभायात्रा के समय टी-शर्ट/दुपट्टा, झण्डे आदि की व्यवस्था होगी। **किराया 1600/- रु. प्रति व्यक्ति है।** जाने के इच्छुक आर्यजन क्षेत्रानुसार संयोजक से सम्पर्क करें -

क्षेत्रीय संयोजक : जनकपुरी - श्री शिवकुमार मदान (9310474979), **विकासपुरी** - श्री ललित चौधरी (9818371375), **पंजाबी बाग** - श्री राजीव आर्य (9212209044), **रानी बाग** - श्री जोगेन्द्र खट्टर (9899478780), **प्रशान्त विहार** - श्री दुर्गा प्रसाद आर्य (9899252852), **रोहिणी** - श्री सुरेन्द्र आर्य (9811476663), **औचन्दी** - श्री महेन्द्र सिंह (9999148483), **महरौली** - श्री एस.पी.सिंह (9868111709), **गोविन्दपुरी** - श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (011-20500724), **विवेक विहार** - श्री गजेन्द्र सिंह सक्सेना (9899196439), **दयानन्द विहार** - श्री ईश नारंग (9911160975), **कृष्णा नगर** - श्री जगदीश मल्होत्रा (9013013802)।

यात्रा संयोजक : *श्री सतीश चड्ढा* *(011-20013123)*

-: निवेदक:-

ब्र. राजसिंह आर्य	*विनय आर्य*	*सोमदत्त महाजन*
प्रधान (9350077858)	*महामन्त्री (9958174441)*	*उप प्रधान (25551587)*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ को उसकी विशिष्ट सेवाओं के लिए

वर्ष 2009 का मुख्यमन्त्री अवार्ड

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में चलाये जा रहे आश्रमों, स्कूलों तथा छात्रावासों में, आसाम व नागालैण्ड स्थित आश्रमों का अनुपम योगदान सदैव से रहा है। लगभग 200 छात्र, छात्राओं द्वारा नि:शुल्क शिक्षा आवास आदि की उत्तम व्यवस्था की प्रशंसा समय-समय पर स्थानीय अधिकारियों तथा मंत्री स्तर तक की जाती रही है। इसी संदर्भ में दयानन्द सेवाश्रम संघा बोकाजान (आसाम) को उसकी विशिष्ट सेवाओं के अन्तर्गत सामुदायिक कार्यक्रमों का विकास वर्ष 2009 का मुख्य मंत्री एवार्ड दिया गया है। प्रशंसनीय प्रमाण पत्र के साथ दयानन्द सेवाश्रम संघ (बोकाजान) को 5000/- की नकद राशि भी प्रदान की गई है। आसाम व नागालैण्ड के अलावा ऐसे ही आश्रम देश के अन्य राज्य राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड आदि राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में भी चलाये जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि अ.भा. द. सेवाश्रम संघ द्वारा दिल्ली स्थित आर्यसमाज रानी बाग में 15 दिनों का आदिवासी वैचारिक क्रांति शिविर मई माह पिछले 28 वर्षों से लगाया जाता है जिसमें देश के आदिवासी क्षेत्रों से लगभग 150-200 शिविरार्थी भाग लेते हैं।

- वेदव्रत मेहता, प्रधान

माता प्रेमलता शास्त्री, महामंत्री

वैवाहिक विज्ञापन – विशेष सूचना

महर्षि दयानन्द जी की यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह हमेशा सदृश अर्थात् परस्पर समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही होना चाहिए। क्योंकि ऐसे विवाह से ही कुल में प्रसन्नता रहती है और उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है।

आज हमारे पारिवारिक अशान्ति, कलह, दु:ख और वैमनस्य का मूल कारण महर्षि के इस वचन का पालन न करना ही है। महर्षि ने तो मनु के प्रमाण से बलपूर्वक यहाँ तक कह दिया कि "चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार (अविवाहित) रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाववालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"

अतः सुख, शान्ति प्रसन्नता और आनन्द चाहने वालों का परम कर्तव्य है कि वे ऋषियों के निर्देश का पालन करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परस्पर विवाह रचायें।

इधर काफी दिनों से देश विदेश के कतिपय आर्य परिवारों की यह मांग रही है कि आर्य संदेश में वैवाहिक विज्ञापन का स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जाये, जिससे कि आर्य परिवारों को श्रेष्ठ, सुशील, निर्व्यसनी शाकाहारी, धार्मिक वर अथवा वधु के चयन में अत्यन्त सुगमता हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब 'आर्यसन्देश' में वैवाहिक विज्ञापन सेवा प्रारंभ की जा रही है। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस सेवा का लाभ उठाकर अपने सुखमय परिवार की आधार शिला बनावें।

ध्यान दें :– 'आर्य सन्देश' में अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन में 'जाति बन्धन नहीं', और 'आर्य वर/आर्य कन्या की आवश्यकता है' ऐसा देना अनिवार्य है। एक अंक के लिए निर्धारित विज्ञापन शुल्क 150/–, दो अंक के लिए 200 तथा लगतार तीन अंकों के लिए 300/– रुपये देय होगा।

– सम्पादक

आर्य कन्या चाहिए

आर्य परिवार के सुपुत्र यशेश निरंजन, जन्मतिथि 20 अप्रैल 1984 कद 5 फुट 6 इंच, सुन्दर, स्वस्थ, बैंक में कार्यरत, शिक्षा एम.बी.ए. इकलौती सन्तान, सभी जायदाद का अकेला उत्तराधिकारी, हेतु शिक्षित, सुन्दर, संस्कारित कन्या चाहिए। सर्विस में हो तो उत्तम रहेगा। अर्न्तजातीय, आर्य परिवार की कन्या चाहिए। दहेज नहीं। सम्पर्क करें।

– निरंजन आर्य, अजमेर (राजस्थान), मो. 9460270207, 9799586737

आर्य वर चाहिए

आर्य परिवार की कन्या आयु 24 वर्ष, कद 5 फुट, रंग गोरा, शिक्षा एम.ए. (संस्कृत), डिप्लोमा इन होमसाइंस, जे.बी.टी., ब्यूटी पार्लर व सिलाई में दक्ष, के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है, जो कार्यरत हो अथवा अपना निजी कारोबार हो। जातिबन्धन नहीं। दिल्ली स्थित इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें

– ब्रह्म प्रकाश यादव, मो. 9210742156, 9350502175

आर्य वर चाहिए

Professional Match for Delhi Based Senior Resident Doctor in Govt. Hospital (MBBS, DNB - Pathology) 163 cms / Nov. 1980, Beautiful & Fair Complexion, T.T./ Vegetarian. Well Reputed, Educated Punjabi Arora Arya Family. **Contact:-**

Mo. 09811763833, 0120-4218740, Email : drusd5@gmail.com

उपयुक्त वधु चाहिए

Caring, working bride for fair, handsome, hearing impaired Artist & Graphic Designer (Bisa Agarwal, 29 years, 5'5") from a highly reputed, cultured and well-connected family living in a posh south Delhi colony. Boy wears digital hearing aids, can converse in Hindi & English and drives a car/motorcycle. Girl should not be hearing impaired. Caste is no bar. **Contact : 09211501545**

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली–58 में

सत्याथ प्रकाश कार्यशाला एवं शंका समाधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के निर्देशन में दिनांक **2 से 8 अक्तूबर,09** तक प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस सत्र में प्रथम 7 समुल्लासों पर विवेचन किया जाएगा। आर्यजनों से निवेदन है कि प्रतिदिन एक समुल्लास पढ़कर सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर ऋषिऋण से उऋण हों।

– शिवकुमार मदान, प्रधान *रमेशचन्द्र आर्य, मन्त्री*

आर्यसमाज बसई दारापुर नई दिल्ली के तत्त्वावधान में

वेद प्रचार सप्ताह (पारिवारिक यज्ञ एवं वैदिक प्रवचन)

दिनांक 21 से 27 सितम्बर, 2009

–श्रीनिवास तंवर, प्रधान **सत्येन्द्र वर्मा, मन्त्री**

<u>पुस्तक समीक्षा</u>

वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार पद्धति

लेखक : आचार्य श्याम देव शास्त्री **पृष्ठ : 64**

प्रकाशन : स्वस्तिका प्रकाशन, आर्यसमाज, नारायणा विहार, नई दिल्ली

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

मूल्य : 15 रुपये **समीक्षक : करण सिंह तंवर**

अन्य धार्मिक कृत्यों एवं संस्कारों की तरह हिन्दुओं (आर्यों) में अन्त्येष्टि (अन्तिम) संस्कार में भी विभिन्नताएं दृष्टिगोचर होती हैं। इन विभिन्नताओं को देखते हुए चिंतन का यह विषय उपस्थित होता है कि हम अन्त्येष्टि संस्कार भी समान रीति से सम्पन्न क्यों नहीं करते?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य जी का ध्यान इस तरफ गया। उन्होंने पुस्तक के लेखक आचार्य श्री श्याम देव जी को इस विषय पर लिखने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप यह पुस्तक हमारे हाथों में है।

मध्यम आकार की 64 पृष्ठों की यह पुस्तक प्रश्न–उत्तर शैली में लिखी गई है। इसमें कुल 75 प्रश्न तथा उसके उत्तर समाविष्ट हैं। इनके अतिरिक्त 121 अन्त्येष्टि संस्कार के मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना तथा चार वैराग्य गीत भी हैं।

विद्वान लेखक ने कई प्रश्नों के उत्तर बड़े तर्कपूर्ण ढंग से दिए हैं, जिनका पालन अवश्य किया जाना चाहिए। जैसे– **क्या शव के ऊपर चादर चढ़ाना उचित है? इसका उत्तर लिखा है कि परिजनों द्वारा चढ़ाई गई चादर–शॉल को शमशान में उतार दिया जाता है, जिन्हें वहाँ के कर्मचारी ले लेते हैं और बाजार में बेच देते हैं।** अतः इससे मृतक को कोई लाभ नहीं मिलता। इसके स्थान पर यज्ञ–सामग्री तथा शुद्ध घी दिया जाये तो वह चिता पर डालने से भस्म होती और मृतक देह की दुर्गन्ध सुगन्ध में बदल जाएगी। इससे सभी प्राणियों को सुख पहुँचेगा।

इसी प्रकार लेखक ने पंचक क्या है? पिण्डदान क्या है? मृत बालकों की दाह क्रिया करनी चाहिए अथवा नहीं? कपाल क्रिया क्या है? क्या मुखाग्नि पुत्री भी कर सकती है? शव का दाह करने के स्थान पर उसे गाड़ना या जल में प्रवाहित करना क्या उचित है? अस्थियों तथा राख का प्रवाह जल में करें या नहीं? आदि प्रश्नों का उत्तर वैदिक अधार पर दिया है।

लेखक ने पुत्र न होने की स्थिति में अथवा अनुपस्थिति में पुत्री को मुखाग्नि देने का अधिकार दिया है। उन्होंने मृतक की अस्थियों तथा राख को पवित्र जल स्रोतों में प्रवाहित करने की बजाय अस्थियों को जमीन में गाड़ने तथा राख को खेतों अथवा जंगल में बिखेरने का सुझाव दिया है, जो समसामयिक तथा उचित है। इस सुझाव पर यदि सब अमल कर लें तो हमारी पवित्र नदियों में बढ़ती जल–प्रदूषण की समस्या का कुछ तो समाधान होगा ही। विद्वान लेखक अन्तिम संस्कार तथा उससे सम्बंधित अन्य लोकाचारों जैसे अस्थि संचय, चौथा, तेरहवीं, उत्तराधिकारविधि, मृतकभोज आदि पर पाठकों की काफी हद तक जिज्ञासाओं का शमन करने में सफल हुए हैं। अतः लेखक बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक की भाषा सरल तथा बोधगम्य है। कम पढ़ा–लिखा व्यक्ति भी इसकी हर बात को आसानी से समझ सकता है।

यह लघु पुस्तक कर्म काण्डी आचार्यों के लिए संग्रहणीय है तथा प्रत्येक आर्य के लिए पठनीय और अनुकरणीय है। विषय के अनुरूप पुस्तक गागर में सागर हैं।

– करण सिंह तवंर, समीक्षक

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल द्वारा आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–1 में

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली आर्य महिला प्रचार मंडल के तत्त्वावधान में वेद प्रचार दिवस आर्य समाज ग्रेटर कैलाश–1 में श्रीमती शकुंतला आर्या पूर्व महापौर की अध्यक्षता में मनाया गया। श्रीमती प्रभा आर्या के संयोजन में यज्ञ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्रीमती संतोष रहेजा ने किया।

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती शकुंतला आर्या ने वेद के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज पाखंड नित नये–नये वेश धारण कर आगें बढ़ रहा है। सत्य असत्य से डर कर कॉप रहा है। विघटनकारी तत्त्व देश की सुरक्षा और अखंडता को चुनौती दे रहे हैं वेदना, विह्लता और करुणा भरे आर्य स्वर में पुकारती वैदिक वाणी प्रत्येक आर्य बहिन का आह्वान कर रही है। आज इस पवित्र दिवस पर हम सभी बहिने संकल्प लें कि माँस भक्षण, मदिरापान, धूम्रपान और खाओ–पीओ, मौज उड़ाओ वाली विलासप्रिय मनोवृत्ति कुचलने का हर संभव प्रयास करेंगी।

समाज सेवी एवं पूर्व अध्यक्षा राष्ट्रीय महिला आयोग श्रीमती मृदुला सिन्हा ने कहा कि महर्षि की शिक्षा से ही राष्ट्रोद्यान पल्लवित और पुष्पित हो सकता है। भारतीय नारी को उच्चासन पर बिठाने का श्रेय केवल आर्यसमाज को ही जाता है। अंत में श्रीमती प्रेम वर्मा मंत्री स्त्री आर्य समाज ग्रे. कै. भाग प्रथम में सभी बहिनों को कार्यक्रम की भागीदारी के लिए आभार प्रकट किया। *– अध्यक्ष*

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली में

भव्य वेद कथा

5 से 11 अक्टूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8 बजे
ब्रह्मा: आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार
भजन : श्री दिनेशदत्त आर्य
भजन–प्रवचन:रात्रि 7.30–9.30बजे
मुख्यवक्ताः आचार्य यशपाल शास्त्री
पूर्णाहुति दिवस : 11 अक्टूबर, 2009

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– गजेन्द्र सिंह सक्सेना, प्रधान
कृष्णलाल किनरा, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्यवीर दल द्वारा

योग व युवा चरित्र निर्माण शिविर

28 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2009

स्थानः एम.डी.ए.वी. स्कूल नकुड (सहारनपुर रोड) सहारनपुर (उ.प्र.)

शिविर में नवयुवकों को ब्रह्मचर्य, व्यायाम, संध्या, यज्ञ आसान–प्राणायाम, दण्ड–बैठक, नियुद्धम (कराटे), सर्वांगसुन्दर व्यायाम (पी.टी.), लाठी, मलखम्ब, भाषण आदि प्रशिक्षण के साथ वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान कराकर धार्मिक, चरित्रवान् और राष्ट्र उपयोगी बनाया जाएगा।

–तेलूराम आर्य, शिविराध्यक्ष

आर्यसमाज हाँसी में

पाँच दिवसीय वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज हाँसी द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय वेद कथा का समापन हर्षोल्लास के साथ हो गया जिसकी संयुक्त अध्यक्षता महाशय जसवन्त सिंह आर्य व चेतन प्रकाश आर्य हिसार ने की। समापन के अवसर पर दिल्ली पुलित प्रशिक्षण महाविद्यालय के विधि विभाग के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के आचार्य जितेन्द्र ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि आर्यों का मुख्य लक्ष्य कृण्वन्तों विश्वमार्यम् है।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना के बाद यह नारा दिया था कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सारे संसार को आर्य बनाना है और श्री राम व श्री कृष्ण की भाँति आर्य बनकर धर्म की रक्षा करते हुए चक्रवर्ती राज्य को भी प्राप्त करना है जो आर्यों की प्राचीन धरोहर है।

आचार्य श्री ने कहा है कि आर्य का अभिप्राय श्रेष्ठ लोगों से है ना कि कोई जाति व समुदाय से है। जैसे री राम व श्री कृष्ण आर्य (श्रेष्ठ) थे।

– आचार्य रामसुफल शास्त्री, प्रैस सचिव

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली– 110006

प्रधान :श्री रामकिशन अग्रवाल
मन्त्री :श्री बाबू राम आर्य
कोषाध्यक्ष :श्री अरुण गुप्ता

आर्यसमाज, बृज विहार, गाजियाबाद का

22 वाँ वार्षिकोत्सव

2 से 4 अक्टूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 7.30 से 9.30 बजे
ब्रह्मा – डॉ. वीरपाल विद्यालंकार
भजन : पं. राजवीर शास्त्री
वेदोपदेश : आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
समापन : रविवार 4 अक्टूबर, 09
समय : प्रातः 7.30 से 1 बजे
अध्यक्ष : श्री तारा चन्द्र वेदालंकार

सभी आर्यजन सपरिवार भाग लेकर वेद प्रचार के पुण्य कार्य को सफल बनायें।

– प्रेम शर्मा, प्रधान,
नरेन्द्र सिंह चौहान, मन्त्री

आर्यसमाज शादीखामपुर एवं महर्षि दयानन्द आर्य पब्लिक स्कूल द्वारा

आध्यात्मिक सत्संग एवं यजुर्वेद शतक यज्ञ

26 से 27 सितम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 7 बजे
ब्रह्मा: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
भजन : श्री राजवीर शास्त्री
पूर्णाहुति : 27 सितम्बर, 2009

सभी आर्यजन सपरिवार पधारकर धर्मलाभ अर्जित करें।

– भीमसेन कामराह, प्रधान
कृपाल सिंह, मन्त्री

आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली में

नैतिक शिक्षा शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज विवेक विहार, दिल्ली–95 में बाल कार्यम के अन्तर्गत द्विदिवसीय नैतिक शिक्षा शिविर दिनांक 12 व 13 सितम्बर, 09 को सम्पन्न हुआ, जिसमें महर्षि दयानन्द जी के 125वें निर्वाण वर्ष पर महर्षि के जीवन से बच्चों को परिचित कराया गया। इस नैतिक शिक्षा शिविर में 145 लड़कों व 103 लड़कियों ने भाग लिया।

– गजेन्द्र सिंह सक्सेना, प्रधान
कृष्णलाल किनरा, मन्त्री

स्व. लाला रामचन्द खट्टर जी की पुण्य स्मृति में

25वां सामवेद परायण यज्ञ

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी रविवार 4 अक्टूबर, 09 को सामवेद परायण यज्ञ श्री वेद शर्मा जी के ब्रह्मत्त्व स्व. लाला रामचन्द खट्टर जी की स्मृति में आयोजित किया गया है। मुख्य वक्ता वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी होंगे। **स्थान :** सी–30 नीलाम्बर अपार्टमेंट, सैनिक विहार प्रीतमपुरा दिल्ली, **यज्ञ :** प्रातः 5.30 बजे, **उपदेश :** प्रातः 11से 12 बजे, भजन : 12 से 12.30 बजे।

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुँचकर धर्मलाभ उठाएं।

– जोगेन्द्र खट्टर
मंत्री , आर्यसमाज रानीबाग

दिल्ली स्थित समस्त आर्यसमाज मन्दिरों के धर्माचार्यों के लिए आवश्यक सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा 16 अगस्त 2009 को आयोजित दिल्ली स्थित समस्त धर्माचार्य / पुरोहितों की बैठक में उपस्थित सभी माननीय धर्माचार्यों को सूचित किया गया था कि दिल्ली सभा द्वारा सभी धर्माचार्यों को प्रामाणिक व उपयोगी पहचानपत्र दिये जायेंगे और सभी उपस्थित महानुभावों को तत्सम्बन्धी विवरण पत्र भी वितरित किये गये थे। अब कई धर्माचार्य महानुभावों के विवरण पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त होने लगे हैं व पहचानपत्र की प्रक्रिया आगे बढ़ रही है।

जो धर्माचार्य उक्त बैठक में सम्मिलित नहीं थे अथवा जिन्होंने अभी तक अपना विवरण नहीं भेजा उनसे निवेदन है कि वे शीघ्रातिशीघ्र सभाकार्यालय से विवरण पत्र प्राप्त करें और उसे यथावत् भरकर अपने रंगीन फोटो सहित सभा कार्यालय में जमा करायें। **विवरण पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर 2009 है। इसके बाद प्राप्त होने वाले विवरण पत्र पर कार्य नहीं किया जा सकेगा।** अतः शीघ्रता करें।

अधिक जानकारी के लिये आचार्य हरि प्रसाद जी (9871516470) से सम्पर्क करें। *– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441*

यज्ञ करने से तेरह वस्तुएँ मिलती हैं– हुकमचन्द शास्त्री

शुक्रवार दिनांक 11 सितम्बर,09 को आर्यसमाज सज्जन नगर, उदयपुर के प्रधान डॉ. बी. आर. चौधरी के निवास स्थान पर हुए सम्पन्न हुए पारिवारिक यज्ञ में श्री हुकमचन्द शास्त्री ने विभिन्न उदाहरण व प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा कि यज्ञ करने वाले को ईश्वर तेरह वस्तुएँ प्रदान करता है जिससे मानव जीवन सफल हो जाता है इसलिए यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। यजमान को मानव योनि, उत्तम माता–पिता, वैभव, दीर्घायु निरोगता, सन्मित्र, उत्तम सन्तान, पतिव्रता स्त्री, भक्ति, विद्या, सुसमाज, चरित्र एवं सुपात्र को दान देना मिलता है।

प्रारम्भ में गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ के ब्रह्मचारी प्रमोद आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ हवन व वेदपाठ हुआ तत्पश्चात् मैनपुरी उत्तर प्रदेश से पधारें श्री रविन्द्र कुमार तिवारी व श्रीमती सुमन तिवारी ने अपने भजनोपदेशों से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। नारनौल हरियाणा से पधारी बहन चौधरी ने कहा कि श्राद्ध जीवितों का करना चाहिए। अमित चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

– चेतन, मन्त्री

आर्यसमाज मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा का

वार्षिकोत्सव व चतुर्वेद शतक यज्ञ

30 सितम्बर से 4 अक्टूबर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 8 बजे
ब्रह्मा : आचार्य अखिलेश्वर
भजन : पं. भानु प्रकाश शास्त्री
भजन–प्रवचनः रात्रि 8 से 10 बजे
समापन : रविवार 4 अक्टूबर, 09

सभी आर्यजन सपरिवार भाग लेकर वेद प्रचार के पुण्य कार्य को सफल बनायें।

– डॉ. इन्द्रसैन मल्होत्रा, प्रधान
सोहन लाल आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई की ओर से

विभिन्न पुरस्कारों के लिए नाम आमन्त्रित

आर्य समाज सान्ताक्रूज वर्ष – 2009 के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	पुरस्कार का नाम	पुरस्कार राशि (रु. में)
(1)	वेद – वेदांग पुरस्कार	25,001/–
(2)	वेदोपदेशक पुरस्कार	15,001/–
(3)	श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार	25,001/–
(4)	श्रीमती लीलावती महाशय आर्य महिला पुरस्कार	11,001/–
(5)	पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार	11,001/–
(6)	श्रीमती कृष्णा गांधी आर्य युवक पुरस्कार	11,00/–
(7)	श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध पुरस्कार	11,000/–
(8)	श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार	11,000/–
(9)	श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार	11,000/–
(10)	श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कार	11,000/–
(11)	श्रीमती शिवराजवती आर्या बाल पुरस्कार	5,000/–
(12)	श्री हरभगवानदास गांधी छात्र सहायता पुरस्कार	6,000/–

जो आर्य बन्धु किसी विद्वान का नाम उपरोक्त पुरस्कारों हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान के जीवन परिचय, कार्य एवम् लिखे गये ग्रन्थों की सूची एवम् प्रति सहित विस्तृत जानकारी दि 30 सितम्बर, 09 तक भेजने की कृपा करें। *– सगीत आर्य, संयोजक (पुरस्कार समिति)*

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

21 सितम्बर, 2009 से 27 सितम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २४/२५-०९-२००९

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११

आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० से अधिक के इनाम

देशभर से भारी मांग के चलते प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि में वृद्धि की गई है।

अब प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि 17 अक्तूबर, 2009 है।

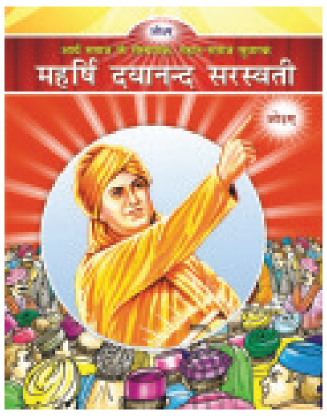

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट

की ओर से

महर्षि दयानन्द जीवनी

(कॉमिक्स) पर

अतिरिक्त पुरस्कार योजना

ड्रा की तिथि : 11 अक्तूबर, 09

केवल 30 सितम्बर, 09 तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही इस अतिरिक्त पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा।

ड्रा के बाद इन प्रविष्टियों को मूल पुरस्कार योजना में सम्मिलित करने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय भेज दिया जाएगा। सभा में प्रविष्टियां भेजने की अन्तिम तिथि 17 अक्तूबर, 2009 है।

यदि आप अतिरिक्त पुरस्कार योजना में सम्मिलित होना चाहते हैं तो निम्न पते पर यथाशीघ्र अपनी प्रविटियां भेजें। भेजने का पता :–

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट,
डी–796, सरस्वती विहार,
दिल्ली–34

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

– भजन प्रकाश आर्य, अध्यक्ष

सम्पर्क :– 27017780, 9718194653

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**